بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 09.01.2026

वक़्फ़-ए-जदीद के अड़सठवें (68)साल के दौरान जमाअत के लोगों की तरफ़ से पेश की जाने वाली क़ुरबानियों का वर्णन और उनहत्तरवें (69)वर्ष के शुरू होने का एलान।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलाबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के.,स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (सुलह महीने की तिथि 9,1404 हश) 09.01.26

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः और सूरः आले इमरान की आयत 93 की तिलावत के बाद इस आयते करीमा का अनुवाद बयान करते हुए हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- (आयत का तर्जुमा) तुम कामिल नेकी को हरगिज़ नहीं पा सकते जब तक अपनी पसंदीदः चीज़ों में से ख़ुदा तआला की राह में खर्च न करो, और जो कोई चीज़ भी तुम खर्च करो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। फ़रमाया- इसकी तफ़सीर में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. ने लिखा है कि क़ुरआन करीम में सूरः बक़रा में जहाँ पहला रुकू शुरू होता है वहाँ मुत्तकियों (अल्लाह की नाराज़गी से डरने वालों) के बारे में फ़रमाया- وَمِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ अर्थात, जो कुछ अल्लाह ने दिया है उसमें से खर्च करते हैं, यह तो पहले रुकू का ज़िक्र है, फिर इसी सूरः में कई जगह इन्फाक़ फ़ी सबीलिल्लाह (अल्लाह के लिए धन खर्च करना) की बड़ी ताकीदें की हैं। अतः तुम असल नेकी को नहीं पा सकोगे जब तक तुम माल खर्च नहीं करोगे। مِمَّا تُحِبُّوۡنَ का अर्थ मेरी दृष्टि से धन है, क्यूंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है- وَاِنَّہٗ لِحُبِّ الۡخَیۡرِ لَشَدِیۡدٌ कि इन्सान को माल बहुत प्यारा है।

पस हक़ीक़ी (वास्तविक) नेकी पाने के लिए ज़रूरी है कि अपनी पसंदीदः चीज़ माल में से खर्च करते रहो।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने भी इसकी विभिन्न स्थानों पर तफ़सीर फ़रमाई है। एक जगह आप अलै. फ़रमाते हैं कि बेकार और निकम्मी चीज़ों के खर्च से कोई आदमी नेकी करने का दावा नहीं कर सकता, नेकी का दरवाज़ा तंग है, अतः यह बात बुद्धि में बिठा लो कि निकम्मी चीज़ों के खर्च करने से कोई इसमें दाख़िल नहीं हो सकता, यदि तकलीफ़ उठाना नहीं चाहते और असल नेकी को पाना नहीं चाहते तो क्यूंकर कामयाब और सफल हो सकते हो।

हुज़ूरे अनवर ने ध्यान दिलाया- अतः वे लोग जो कभी कभी अच्छा कमा लेते हैं परन्तु अपनी माली क़ुरबानियों में उस स्तर पर नहीं होते, जितना एक आम औसत (मध्यम) दर्जे का कमाने वाला अहमदी होता है। तो ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि असल क़ुर्बानी तो यह है कि जिस चीज़ से तुम्हें मुहब्बत है, वह उसकी राह में खर्च करो, तभी तुम अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले बन सकोगे और उसके फ़ज़लों के वारिस बन सकोगे। अल्लाह ताला ने केवल एक दो जगह नहीं बल्कि क़ुरआने करीम में कई स्थानों पर इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह का आदेश दिया है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि जमाअत के अक्सर लोग माल की क़ुरबानियों में बड़ी ख़ुशी से हिस्सा लेते हैं, किन्तु कुछ ऐसे हैं कि जिनमें कंजूसी होती है तो उनको अल्लाह तआला की यह बात याद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआला की राह में माल खर्च करना ज़रूरी है। ज़्यादा कमाने वाले बेशक कुछ ऐसे हैं कि जो तहरीकों में भाग लेते हैं और बड़ा बढ़ चढ़ कर भाग लेते हैं, परन्तु यहाँ इसके बीच ही मैं यह भी बता दूं कि वह चन्दा जो अपना हिस्सा आमद इत्यादि का है, वह सही शरह से अदा नहीं करते और उसमें बाक़ायदा (नियमानुसार और निरन्तर) नहीं हैं, तो ऐसे लोगों को अपना जायज़ा लेना चाहिए।

हदीसों में भी इसके बारे में आंहज़रत ﷺ ने कई जगह हमें इस बात की नसीहत फ़रमाई है कि माली क़ुरबानी करनी चाहिए। हज़रत हसन रज़ी. से रिवायत है, यह हदीसे क़ुदसी है, कि आप स. ने अल्लाह तआला के हवाले से फ़रमाया कि ऐ आदम के बेटे! तू अपना ख़ज़ाना मेरे पास जमा करके निशचिंत हो जा, न आग लगने का ख़तरा, न पानी में डूबने का भय और न किसी चोर के चोरी करने का डर, मेरे पास रखा गया ख़ज़ाना मैं तुझे पूरा वापस दूंगा, उस दिन जबकि तुझे इसकी सबसे अधिक ज़रुरत होगी।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि हम ख़ुश क़िस्मत हैं कि आज अहमदियों में अधिकतर लोगों को इस बात का अहसास है, वे अल्लाह की राह में ख़ूब खर्च करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलै. के ज़माने में भी इस खर्च की ऐसी मिसालें हैं, बल्कि उनको देख कर आप अलै. ने एक बार फ़रमाया

था कि मैं हैरान (चकित) होता हूँ कि किस प्रकार ग़रीब लोग दीन के लिए इतनी क़ुरबानियाँ कर रहे हैं, आज भी यही हाल है, मैंने देखा है कि अक्सर ग़रीब लोगों में से या औसत तबक़े (मध्यम वर्ग) के कमाने वाले जो हैं, वे बड़ी बड़ी क़ुरबानियाँ करते हैं, क्यूंकि उन्हें यह अहसास है कि अल्लाह तआला ने हमें यह माल लौटना है, या हम अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस बनेंगे, इस तरह? यह अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है, इस जहान में भी और अगले जहान में भी। असल बात यही है कि अगले जहान में अल्लाह तआला उसे लौटाएगा, इसके सवाब में शामिल करेगा और ये क़ुरबानियाँ उनके लिए दर्जात की बुलंदी का कारण बनेंगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि हमेशा यह याद रखना चाहिए कि हमें तक़वा व तहारत (निष्ठा) में कहाँ तक तरक्क़ी की है, इसका पैमाना क़ुरआन है। अल्लाह तआला मुत्तक़ी को दुनिया के धन्दों से बचा कर उसके कामों का ख़ुद ज़िम्मेदार हो जाता है।

फिर हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि चूंकि इस समय मैं वकफ़े जदीद के हवाले से बात करने वाला हूँ इस लिए मैं उन लोगों के कुछ उदाहरण पेश कर देता हूँ जिन्होंने वकफ़े जदीद के चन्दे दिए और उन पर अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किए, अथवा उनको अल्लाह तआला पर कितना यक़ीन और मान था कि अगर वे क़ुरबानी कर दें तो अल्लाह तआला उनकी ज़रूरतें पूरी करेगा।

इसी तनाज़ुर (परिवेश) में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इंडोनेशिया, कीनिया, क़ज़ाकिस्तान इत्यादि देशों के माली क़ुरबानी से सम्बंधित ईमान बढ़ाने वाली बातों के बाद फ़रमाया- इन्डिया से वहाँ के इंस्पेक्टर वक़फ़े जदीद लिखते हैं कि जमाअत में एक साहब हैं, उनके पास गए, उनका सोलह हज़ार रुपया वकफ़े जदीद का चन्दा बकाया था, उन्होंने अपनी एक बहुत ज़रूरी किस्त अदा करनी थी। हमारे पहुँचने पर उन्होंने कहा कि मैंने अपनी ई.एम.आई. की जो किस्त देनी है, वह तो देखी जाएगी, मैं अदा कर दूंगा बाद में, अब चूंकि मेरा बकाया है और मेरे पास आ भी गए हैं आप लोग, तो पहले मैं आपको चन्दे का बकाया अदा करता हूँ। हमने उनसे कहा कि आप मुश्किल हालात में हैं इस समय, आप आधा बकाया अदा कर दें, बाक़ी बाद में दे दें। उन्होंने जवाब दिया कि पहले अल्लाह तआला के लिए निकालना है, बाक़ी मामलात अल्लाह तआला बेहतर करेगा, इंशाल्लाह। अगर मैं तक़वा से काम ले रहा हूँ और अल्लाह पर भरोसा कर रहा हूँ तो अल्लाह तआला बेहतर सामान पैदा कर देगा। बाद में उन्होंने फ़ोन पर बताया कि उनकी एक रक़म जो लम्बे समय से रुकी हुई थी, और आशा नहीं थी कि वह मुझे इतनी जल्दी मिल जाएगी, वह अचानक मिल गयी। इस तरह अल्लाह तआला ने चन्दे की बरकत से सारे काम पूरे कर दिए, मेरे ईमान में भी इज़ाफा (वृद्धि) हुआ और मैंने देखा कि क़ुरबानी करने वालों के साथ अल्लाह तआला का कैसा सलूक है। वकफ़े जदीद के माली जिहाद में क़ुरबानी करने वाले मुख्लिसीन (निष्ठावान) की विभिन्न ईमान को बढ़ाने वाली बातों और उन पर नाज़िल होने वाले ख़ुदा तआला के बड़े बड़े

फ़ज़्लों को बयान करने के बाद हुज़ूरे अनवर ने सब देशों और जमाअतों की पोज़ीशन बयान फ़रमाई- अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वकफ़े जदीद के इस साल के दौरान जमाअत अहमदिया आलमगीर (विश्वव्यापी) की तरफ़ से लगभग 15 मि लियन पा उन्ड की माली क़ुरबानी पेश की गयी। यह वसूली पिछले साल की तुलना में 1.3 मिलियन पाउन्ड ज़्यादा है। **वसूली के लिहाज़ (दृष्टि) से दुनिया भर की पहली दस जमाअतें-** बर्तानिया, केनेडा, जर्मनी, अमरीका, भारत, आस्ट्रेलिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, इंडोनेशिया, मि डिल ईस्ट की एक जमाअत, बेल्जियम। **अफ़्रीका की पहली दस जमाअतें-** घाना, मारीशस, बर्कीना फासो, तंज़ानिया, नाईजेरिया। **शामिलीन में इज़ाफ़े के लिहाज़ से विशेष जमाअतें-** नाईजेरिया, नाईजर, गेम्बिया, गिनी बसाओ, कोंगो ब्राज़ील, आईवरी कोस्ट, सेंट्रल अफ़्रीका और कोंगो कंशासा।

भारत के पहले दस प्रदेश- केरला, तामिल नाडु, जम्मू कश्मीर, तेलंगाना, कर्नाटक, ओडीशा, पंजाब, वेस्ट बंगाल, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश। **भारत की पहली दस जमाअतें-** कोएम्बतूर, हैदराबाद, क़ादियान, कालीकट, मेलापलियम, बंगलौर, मंजेरी, कोलकत्ता, केरंग, करोलाई।

अल्लाह तआला इन सब माली क़ुरबानी करने वालों के अमवाल व नफ़ूस (जान और माल) में बेइन्तहा बरकत अता फ़रमाए।

कुछ जमाअतों के नाम मैं इस लिए पढ़ देता हूँ कि इनको ख़याल होता है कि क्या पोज़ीशन है, हमें बताया जाए, इस लिए रिवायत के मुताबिक पढ़ा जाता है।

आख़िर पर हुज़ूरे अनवर ने हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलै. के माली क़ुरबानी की अहमियत (महत्त्व) पर मबनी (आधारित) एक इक्तिबास (वृत्तांत) की रोशनी में फ़रमाया कि अतः यह अल्लाह तआला का ख़ास (विशेष) फ़ज़्ल है और हमने तजरबा भी किया है कि किस तरह अल्लाह तआला लोगों को नवाज़ता (प्रदान करता) चला जाता है, क्यूंकि वे समझते हैं कि अल्लाह तआला के पास ही सारे ख़ज़ाने हैं, वह आख़िरी जहान में इनसे नवाज़ेगा, लेकिन इस दुनिया में भी नवाज़ता चला जाएगा। इन्सान हैरान रह जाता है कि किस तरह अल्लाह तआला हमें दे रहा है। अल्लाह तआला हमें जहां माली क़ुरबानियों की तौफ़ीक़ आइंदा देता रहे, वहां हमारे ईमान और यक़ीन में भी इज़ाफ़ा करता चला जाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब